तीन बड़े बेवकूफ

एक लोक कथा

एक ज़माने में एक किसान और उसकी पत्नी अपनी एक बेटी के साथ रहते थे. बेटी एक युवक से प्यार करती थी. हर दिन वो युवक अपनी प्रेमिका से मिलने आता था और रात का खाना उन्हीं के घर खाता था. एक शाम बेटी बीयर लेने के लिए तहखाने में गई.

शाम को जब वो बीयर लेने के लिए नीचे गई, तो उसने छत की तरफ देखा. वहां उसे बल्ली से एक कुल्हाड़ी लटकी हुए दिखाई दी. कुल्हाड़ी वहां एक लंबे समय से लटकी होगी, लेकिन किसी का उसपर ध्यान नहीं गया था. पर कुल्हाड़ी देखकर लड़की सोचने को मजबूर हुई.

उसे कुल्हाड़ी का वहाँ होना बहुत खतरनाक लगा. उसने खुद से कहा, "मान लो उस युवक से मेरी शादी के बाद हमारा एक बेटा होता है. फिर वो लड़का बड़ा होने के बाद कभी तहखाने में बियर निकालने आता है. अगर तब कुल्हाड़ी उसके सिर पर गिरी तो यह कितनी भयानक बात होगी!"

उसके बाद लड़की ने मोमबत्ती और जग को नीचे रख दिया. फिर वो वहां बैठ गई और रोने लगी. ड्रम से बियर ज़मीन पर बहने लगी.

ऊपर लोग आश्चर्यचकित थे कि उसे नीचे से बियर लाने में इतनी देर क्यों लगी. इसलिए माँ लड़की को देखने के लिए नीचे गई. माँ ने लड़की को फर्श पर बैठे और रोते हुए पाया. ड्रम से बियर ज़मीन पर बह रही थी.

"क्यों, क्या बात है?" माँ ने पूछा.

"ओह! माँ!" लड़की ने कहा. "ज़रा उस डरावनी कुल्हाड़ी को देखो! मान लो मेरी शादी के बाद मेरा एक बेटा हो और वो बड़ा होकर यहाँ बीयर लेने के लिए तहखाने में आए, और कुल्हाड़ी उसके सिर पर गिरी तो इससे भयानक बात और क्या होगी?"

"प्रिय, प्रिय! यह तो बड़ी भयानक बात होगी!" माँ ने कहा, और वो भी अपनी बेटी के पास बैठकर रोने लगी.

फिर, थोड़े समय के बाद, पिता भी इतनी देरी को लेकर आश्चर्य करने लगे. वो अपनी पत्नी और बेटी को देखने के लिए तहखाने में गए. वहाँ उन्होंने दोनों को रोते हुए पाया. साथ में बीयर भी पूरे फर्श पर फैली थी.

"क्या बात है?" उन्होंने पूछा.

"क्यों," माँ ने कहा, "ज़रा उस डरावनी कुल्हाड़ी को देखो! मान लो, अगर हमारी बेटी और उसके प्रेमी की शादी होती है और उनका एक बेटा होता है, और वो बड़ा होकर एक दिन बीयर लेने तहखाने में आता है, और कुल्हाड़ी उसके सिर पर गिरती है, इससे भयावह बात और क्या होगी?"

"प्रिय, प्रिय, प्रिय! तब तो बड़ा अनर्थ होगा!" पिता ने कहा.

फिर वो भी उनके पास बैठ गए और रोने लगे.

काफी देर बाद युवक रसोई में इंतजार करते-करते थक बिल्कुल थक गया और अंत में वो भी तहखाने में देखने गया. वहाँ उसने तीनों को रोते हुए पाया. साथ में पूरे फर्श पर बीयर फैली थी. उसने दौड़कर बियर के ड्रम के नल को बंद किया.

फिर उसने पूछा, "आप तीनों क्यों रो रहे हैं, और बीयर को पूरे फर्श पर फैलने दे रहे हैं?"

"ओह!" पिता ने कहा, "ज़रा उस डरावनी कुल्हाड़ी को देखो! मान लो कि तुम और हमारी बेटी की शादी होती है और फिर एक बेटा होता है और वो बड़ा होकर बीयर लेने के लिए तहखाने में आता और कुल्हाड़ी उसके सिर पर गिर पड़ती है!"

उसके बाद फिर से तीनों अपना गला फाड़-फाड़कर रोने लगे.

लेकिन युवक ने हँसते हुए लोटपोट हुआ. उसने ऊपर उठकर कुल्हाड़ी निकाली और नीचे रखी.
फिर उसने कहा, "मैंने आजतक बहुत यात्रा की है, लेकिन मैंने आप जैसे तीन बेवकूफ पहले कभी नहीं देखे! मैं अब फिर से अपनी यात्रा शुरू करूंगा. जब मुझे आपसे भी महान तीन बेवकूफ मिलेंगे तब मैं वापस आऊंगा और आपकी बेटी की शादी करूंगा.”
फिर उसने उन से अलविदा कहा और अपनी यात्रा दुबारा शुरू की.
वे सभी अभी भी रो रहे थे क्योंकि लड़की ने अपना प्रेमी खो दिया था.

एक लंबा सफर तय करने के बाद युवक आखिरकार एक महिला की झोपड़ी में आया, जिसकी छत पर घास उग रही थी. महिला घास खिलाने के लिए गाय को छत पर जाने के लिए सीढ़ी चढाने की कोशिश कर रही थी. पर गरीब गाय से सीढ़ी चढ़ी नहीं जा रही थी. फिर युवक ने महिला से पूछा कि वो आखिर ऐसा क्यों कर रही थी.

"ज़रा, देखो" उसने कहा, "उस सुंदर घास को देखो. मैं घास खिलाने के लिए गाय को छत पर ले जा रही हूं. वहां वो काफी सुरक्षित रहेगी, क्योंकि मैं उसके चारों ओर एक रस्सी बाँधूंगी और रस्सी को चिमनी में से पिरो दूँगी. रस्सी के दूसरे सिरे को मैं अपने हाथ में पकड़ूँगी. फिर गाय मेरी जानकारी के बिना गिर नहीं पायेगी."

"ओह, तुम बड़ी मूर्ख हो!" युवक ने कहा. "तुम छत की घास को काटकर उसे नीचे क्यों नहीं फेंक देतीं?"

लेकिन महिला को लगा छत से घास काटकर फेंकने से गाय को सीढ़ी से ऊपर लाना आसान होगा! इसलिए उसने गाय को सहलाया और उसे उठाया, और फिर उसके चारों ओर एक रस्सी बाँधी जिसे उसने चिमनी में से पिरोया और रस्सी के दूसरे सिरे को अपनी कलाई से बाँधा.

फिर वो युवक अपने रास्ते पर चला. लेकिन तभी वो गाय छत से गिर पड़ी और रस्सी से बीच हवा में लटकने लगी. गाय के वजन ने महिला को चिमनी में से अंदर खींच लिया, और वो बहुत बुरी तरह से अटक गई.

खैर, वो महिला पहली महान मूर्ख निकली.

युवक आगे बढ़ा. वह सराय में एक रात के लिए रुका. सराय इतनी भरी थी कि उसे एक अन्य यात्री के साथ कमरे में रहना पड़ा. दूसरा आदमी एक बहुत अच्छा और बहुत मिलनसार इंसान था.

लेकिन सुबह, जब वे दोनों उठे तो दूसरे व्यक्ति ने मेज़ की दराज खोलकर
उसपर अपनी पतलून लटकाई. फिर वो आदमी पूरे कमरे में दौड़ लगा
कर पतलून में कूदने की और उसे पहनने की कोशिश करता रहा.
उसने बार-बार कोशिश की, पर वो उसमें सफल नहीं हुआ.
युवक सोचता रहा कि वो आदमी अखिल ऐसा क्यों क्या कर रहा था.

आखिर में अजनबी ने रूमाल से अपना चेहरा पोंछना बंद किया.
"देखो, दोस्त," उसने कहा, "मुझे लगता है कि पतलून बड़ी अजीब किस्म का कपड़ा है. इस अजीब चीज़ का आविष्कार किसने किया? हर सुबह मुझे पतलून में इस तरह घुसने में एक घंटे का समय लग जाता है. मैं खुद को बहुत गर्म भी महसूस करता हूँ! भला आप अपनी पतलून कैसे पहनते हैं?"
यह सुनकर युवक हँसने लगा और उसने अपने साथी को पतलून पहनने का तरीका दिखाया. उस आदमी ने युवक का आभार प्रकट किया. उसने कहा कि उसने ऐसा करने के बारे में कभी सोचा तक नहीं था.
तो वो दूसरा महान मूर्ख था!

उसके बाद युवक ने अपनी आगे की यात्रा शुरू की. कुछ समय बाद वो एक गाँव में पहुंचा. गाँव के बाहर एक तालाब था, और तालाब के चारों ओर लोगों की भीड़ लगी थी. लोग तालाब में फावड़े, झाड़ू, बेलचे आदि लेकर पहुंचे थे. युवक ने उनसे वहां इकट्ठे होने का कारण पूछा.

"क्यों," उन्होंने कहा, "देखो, चंद्रमा तालाब में गिर गया है, और हम लोग उसे बाहर निकालने की भरसक कोशिश कर रहे हैं!"

यह सुनकर युवक हँसा. उसने उन लोगों से आकाश में चन्द्रमा देखने को कहा. उसने कहा कि जो उन्हें पानी में दिखाई दे रहा था वो तो सिर्फ चंद्रमा का प्रतिबिंब था!

लेकिन लोगों ने युवक की बात मानने से इंकार कर दिया. उन्होंने उस युवक के साथ शर्मनाक व्यवहार किया. फिर जितनी जल्दी संभव हुआ युवक वहां से भाग निकला.

अब उसे घर के बेवकूफों से भी महान बेवकूफ
मिले थे. इसलिए युवक फिर घर वापस लौटा और
वहां जाकर उसने किसान की बेटी से शादी की.
फिर वे हमेशा खुशी-खुशी रहे.

समाप्त